CHAPTER 17

शिरीष के फूल

PAGE 148, अभ्यास - पाठ के साथ

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ: 1

लेखक शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?

उत्तर: 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' शिरीष को अद्भुत मानते हैं। क्योंकि एक संन्यासी की तरह वह सुख और दुःख की परवाह नहीं करता है और एक शास्त्रीय अवधूत की तरह जीवन की अजेयता के मंत्र की घोषणा करता है। जब पृथ्वी अग्नि की तरह ध्यान कर रही है। शिरीष अभी भी कोमल फूलों से लड़ता रहता है। बाहर की गर्मी, धूप, बारिश, गरज के साथ कुछ भी प्रभावित नहीं होता है। इतना ही नहीं, वह लंबे समय तक भोजन करता रहता है। शिरीष धैर्य के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपना अजेय जीवन व्यतीत करता है। भावनाओं की भीषण गर्मी में भी वह गतिहीन रहता

है।

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:2

हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी ज़रूरी हो जाती है- प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर: लेखक 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार हृदय की कोमलता को बचने के लिए कभी कभी कठोर व्यव्हार करना पड़ता है। कभी कभी कठोर व्यवहार करने से हम ठगे जाने से बच जाते है।

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:3

द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।

उत्तर: शिरीष उस समय पनपता है जब गर्मी अपने चरम पर होती है। यहाँ लेखक ने जीवन के संघर्ष के साथ गर्मी की तीव्रता को जोड़ा है। मनुष्य का जीवन संघर्षों और पीड़ाओं के

मेल से बना है। न केवल इसका सामना करना पड़ता है, बल्कि अपने कोमल फूलों को खिलाने से यह साबित होता है कि सबसे कठिन परिस्थितियों में भी, एक व्यक्ति जीने की इच्छा को बनाए रखकर इसे दूर कर सकता है। यह मनुष्य के जीने की इच्छा और उसके जीवित रहने के संघर्ष पर निर्भर करता है। यदि कोई आदमी लड़ना बंद कर देता है और विषम और विकट परिस्थितियों से घबरा जाता है तो वह जीवित नहीं रह सकता। वह टूट जाएगा। शिरीष वृक्ष हमें सभी जीव जीवों से मुक्त रहने की प्रेरणा देता है, बिना किसी गड़बड़ी के यहां तक कि उत्पात और संघर्ष जैसी स्थितियों में भी।

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:4

हाय, वह अवधूत आज कहाँ है! ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?

उत्तर: सांसारिक मोह माया से ऊपर उठने वाले लोग। वे आत्मविश्वास का प्रतीक हैं। लेकिन आज, मानव आत्म-शक्ति के बजाय, लोग शरीर, धन शक्ति आदि जुटाने में लगे हुए हैं, आज मानव में आत्मविश्वास की कमी है। आज मानव,

जीवन-मूल्यों को त्याग कर, गलत प्रवृत्ति, हिंसा, असत्य आदि को अपनाते हुए अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है। ऐसी स्थिति किसी भी सभ्यता के लिए संकट की तरह है।

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:5

कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय-एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य-कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाएँ।

उत्तर: इसने साहित्य-काम के लिए बहुत उच्च मानदंड स्थापित किए हैं। क्योंकि द्विवेदी जी के अनुसार, एक महान कवि बन सकता है, जिसके पास एक अनासक्त योगी की तरह, एक स्थिर दिल और एक उदार दिल प्रेमी की तरह हो। कोई भी छंद लिख सकता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक महान कवि है। कवि को वज्र के समान कठोर और फूल की तरह कोमल दोनों चाहिए। इसीलिए लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी काबी आर दास और कालिदास को महान माना जाता है क्योंकि दोनों में एक प्रकार की अस्वस्थता थी। यही कारण है कि लेखक हजारी प्रसाद

द्विवेदी जी कबीर दास और कालिदास को इसलिए महान मानते हैं क्योंकि इन दोनों में अनासक्ति का भाव था

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:6

सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है, जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

उत्तर: एक इंसान को खुद को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए, जो एक आदमी खुश, उदास, निराश और निराश न होकर रहता है। वही प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाता है। इसलिए, यह दीर्घकालिक है। हमें अपने स्वभाव से जड़ता को खत्म करना होगा। क्योंकि जड़ता मनुष्य को प्रगति नहीं देती और मनुष्य को कुचल देती है। केवल वे ही जो समय और स्थिति के अनुसार परिवर्तन को स्वीकार करते हैं, लंबे समय तक अपने अस्तित्व को बचाने में सक्षम हैं। भारतीय संस्कृति इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जिसने कई सभ्यताओं को जन्म दिया। पहले क्या मौजूद थे और कितने आक्रमण हुए थे और जिन्हें नष्ट कर दिया गया

था, जिनके अवशेष आज भी मिलते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद, भारतीय संस्कृति आज भी उसी गरिमा के साथ खड़ी है। ऐसे लेखक ने शिरीष के फल का उदाहरण दिया है। इसके फल अपने पेड़ से तब तक चिपके रहते हैं जब तक कि नए फूल और पत्तियां उन्हें गिरने के लिए मजबूर न करें। इसलिए हम सभी को समय के अनुसार खुद को ढालना चाहिए और इस बदलते समय में कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहिए। शिरीष के फूल और गांधी जी इसके सबसे महान उदाहरण हैं।

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके साथ:7

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

(ख) जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेख-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?..... मैं कहता हूँ कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो।

(ग) फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है।

उत्तर:

(क) इन पंक्तियों में जीवन जीने की कला का उल्लेख है। लेखक के अनुसार, दुरंत प्राणधारा और सर्वशक्तिमान कलाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। जो बुद्धिमान और समझदार हैं वे अपनी जिंदगी लगातार लड़ रहे हैं। लेकिन जो मूर्ख हैं वे अपनी जगह से थोड़ा भी आगे बढ़ने को तैयार नहीं हैं। उन्हें लगता है कि अपनी जगह पर रहने से वे समय के दृष्टिकोण से बच जाएंगे। वे निर्दोष और भोले हैं। वे नहीं जानते कि जड़ता मृत्यु के समान है, तो गतिशीलता जीवन है। जो आगे बढ़ता है, आगे बढ़ता है और आगे बढ़ता है उसे मृत्यु से भी बचाया जा सकता है। क्योंकि गतिशीलता ही जीवन है।

(ख) ये पंक्तियाँ सच्चे कवियों की हैं। लेखक का मानना है कि अगर आप एक महान कवि बनना चाहते हैं, तो आपको लगाव से दूर रहना होगा और एक पकौड़ा बनना होगा। टुकड़ी द्वारा, एक व्यक्ति एक तटस्थ अर्थ में

निरीक्षण करने में सक्षम है और उधम मचाते हुए, वह सांसारिक आकर्षण से दूर रहता है। जो अपने कार्यों, हानि और लाभ आदि के हिसाब को मिलाने में उलझ जाता है, वह कवि नहीं बन पता है।

(ग) यह रेखा सौंदर्य और सृजन की सीमा को संदर्भित करती है। लेखक का यह कहना था कि फल, वृक्ष और फूल का अपना अस्तित्व है। ये सिर्फ खत्म नहीं होते हैं, बल्कि वे हम सभी को संकेत देते हैं कि जीवन में अभी बहुत कुछ बाकी है। अभी भी सृजन की बहुत संभावना है।

PAGE 149, अभ्यास - पाठकेआसपास

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके आसपास:1

शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर: ज्येष्ठ माह अर्थात ग्रीष्म ऋतु का सबसे प्रचंड गर्मी वाला महीना। इस समय जन-जीवन ही नहीं धरती और वन भी गर्मी की प्रचंडता से झुलस जाते हैं। ऐसे तपते मौसम में

भी शिरीष के फूलों का खिले रहना किसी आश्चर्य से कम नहीं। ऐसी गर्मी में तो मज़बूत छाल वाले वृक्ष तक मुरझा जाते हैं। फूलों को तो निश्चय ही जल जाना चाहिए किन्तु ये शिरीष के फूल तो खिले रहते हैं। ये तो तभी संभव है जब पुष्प इतने ठंढे और शीतल हों कि आग भी इन्हें छूकर ठंढी हो जाए। इसी आधार पर इन्हें शीत पुष्प की संज्ञा दी गई होगी।

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - पाठके आसपास:2
कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

उत्तर: अगर हम गांधीजी के बारे में बात करते हैं, तो वह मनुष्यों की तुलना में एक उच्च स्तर तक बढ़ गया और एक विचार बन गया। इसके दो सबसे बड़े कारण थे। सबसे पहले, उनके पास बच्चों की तरह कोमल भावनाएं और कोमल हृदय था, जिसने उन्हें भारत के आम लोगों की पीड़ा के साथ रो दिया। दूसरी ओर, उनके पास वज्र के समान साहस था जिसमें वे वज्र की तरह अंग्रेजों के खिलाफ खड़े होते थे। एक तरफ गांधीजी के भीतर सत्य और अहिंसा की कोमल भावना थी,

दूसरी तरफ अनुशासन के मामले में बहुत कठिन था। इसलिए, हम कह सकते हैं कि कोमल और कठोर दोनों भाव गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

PAGE 149, अभ्यास - भाषाकीबात

12:1:17:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकी बात:1

आजकल अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भारतीय फूलों की बहुत माँग है। बहुत से किसान साग-सब्ज़ी व अन्न उत्पादन छोड़ फूलों की खेती को ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसी मुद्दे को विषय बनाते हुए वाद-वाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।

उत्तर:

(क) ऐसे दुमदारों से तो लंडूरे भले।

(ख) जो फरा,सो झरा।

(ग) पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है।

(घ) जमे कि मरे।

(ङ) न ऊधो का लेना,नमाधो का देना।